वर्ष-2, अंक-6, मार्च-अप्रैल-मई, 2014

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सम्पादक
आग्नेय

सदानीरा
विश्व कविता की पत्रिका

सदानीरा का ई-संस्करण **sadaneera.com** पर उपलब्ध.

एक वर्ष में चार बार प्रकाशित
यह अंक : **मार्च-अप्रैल-मई, 2014**
मूल्य - 100 रुपये, वार्षिक 400 रुपर
संस्थाओं के लिए वार्षिक 500 रुपर

वार्षिक शुल्क **सदानीरा** के नाम पर
भोपाल में देय चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट य
मनीऑर्डर से भेजें.

अंक रजिस्टर्ड डाक से.

सम्पादकीय सम्पर्क :

बी-207, चिनार वुडलैण्ड,
कोलार रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 0755-2424126
मो.- 093031-39295, 094244-1013
ई-मेल- agneya@hotmail.com

प्रकाशक :

महेन्द्र गगन
25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फ़ोन- 0755-25578
मो.- 094250-11789
ई-मेल- pahlepahal@gmail.com

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से 05

स्मरण

तादयुश रोजेविच

माया एंजेलो

रोजेविच : चेस्वाव मिवोश/ अनुवाद : **आग्नेय** 09

तादयुश रोजेविच : कविता का अर्थ है साँस के लिए संघर्ष/ **गीत चतुर्वेदी** 10

तादयुश रोजेविच की कविताएँ/ अनुवाद :

कुँवर नारायण 16

अशोक वाजपेयी 20

उदय प्रकाश 22

नीलाभ 25

आग्नेय 27

माया एंजेलो : हर रोज उगती थी सूर्य की तरह/ **गीत चतुर्वेदी** 41

माया एंजेलो की कविताएँ व आत्मकथा का अंश/ अनुवाद **: सरिता शर्मा** 43

भाष्य

चेस्वाव मिवोश की कविता **: कोई दूसरा अंत**/ **गीत चतुर्वेदी** 58

शाश्वत प्रेम

विद्यापति और जायसी/ **ध्रुव शुक्ल** 65

अमेरिकी कविता

वाल्ट व्हिटमैन के सॉन्ग ऑफ़ मायसेल्फ़ के कुछ अंश/ अनुवाद : **लाल्टू** 72

अरबी कविता

फदील अल-अज़्ज़वी की कविताएँ/ अनुवाद : **मनोज पटेल** 82

निज़ार क़ब्बानी की कविताएँ/ अनुवाद : **भावना मिश्र** 99

एकाग्र

गीत चतुर्वेदी का रचना संसा

सात कविताएं 11:

डायरी 12(

साक्षात्कार 14:

एदुआर्दो चिरिनोस की कविताओं का अनुव 16(

आलेख

औपन्यासिक काव्यात्मक वैभव और बुकमार्क/ **अविनाश मिश्र** 16:

पीयूष दईया की कविता

होने न होने के बीच/ **प्रभात त्रिपाठी** 18

युवा कविता

निखिल आनन्द गिरि 19:

सिद्धान्त मोहन 20!

सुधांशु फिरदौस 21

चयन : अविनाश मिश्र

अवदान 21!

सदानीरा : यहाँ से लें 21:

सम्पादक की ओर से

हमारा समय

क्या लेखक और उसके लेखन को लेकर नैतिकता के प्रश्न उठाए जा सकते हैं? क्या लेखक का जीवन, उसके जीवन जीने का तरीका और उसके जीवन यापन के साधनों के बारे में नैतिकता का कोई तारतम्य बन सकता है या बनाया जा सकता है? क्या लेखक के विरुद्ध समाज या जनता की अदालत में या राज्यसत्ता की किसी कचहरी में अभियोग-पत्र दाखिल किया जा सकता है? क्या लेखक और उसके लेखन से किसी भी प्रकार की कोई जवाबदेही और प्रतिबद्धता की आशा की जा सकती है? क्या लेखक की स्वायत्तता, उसके स्वाधीन बने रहने की आकांक्षा, उसके अराजक होने का अधिकार और उसके बहुरूपिया के अवसर को किसी तरह से भी सीमित करना लेखन के विरुद्ध चले होगा?

ये सारे प्रश्न ऐसे हैं जिनके दो टूक जवाब देना और पाना कठिन है। सर्वमान्य उत्तर न पाने की विवशता होने के बावजूद साहित्य के संसार में ये सवाल अनेक बहसों के केन्द्र में रह चुके हैं और अब भी केन्द्र में हैं। यद्यपि कुछ लोग सवालों को ग़ैर-ज़रूरी समझकर और बताकर एक ज़रूरी बहस से दरकिन

हो जाना चाहते हैं। उनके साहित्यिक रोजनामचों में, उनके 'कभी–कभारों' आत्मरतियों और आत्मप्रवचनों को इतना स्पेस दिया जाता है कि साहित्य किसी ज़रूरी और बुनियादी सवालों पर बहस की गुंजाइश ही नहीं बचती। ये साहित्यमनीषी अपनी आँखों से दूसरों को दुनिया देखने के लिए एक ऐसा मायालोक रचते हैं, जहाँ न तो नैतिकता के प्रश्न हैं, जहाँ न जवाबदेही का कोई सवाल है और न जहाँ नैतिक प्रतिबद्धताओं के लिए कोई स्पेस है। उनकी दुनिया में प्रलोभन, पद, सम्मान, सत्ता और राज्याश्रय सर्वाधिक कामना करने वाली चीज़ें हैं।

क्या एक लेखक को अपने जीवन के किसी मोड़ पर, किसी मुहाने पर, किसी मुकाम पर अपने आपसे यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिए कि जीवन में ऐसा समय आ जाता है जब सारी भौतिक चीज़ें अपना वैभव, अपनी दिव्यता, अपनी महिमा खोने लगती हैं। क्या लेखक के जीवन में भी ऐसा समय आ गया है या आने वाला है? उसके बारे में उसे निश्चित होना है और ऐसे समय की प्रतीक्षा करनी है और जब ऐसा समय किसी लेखक के जीवन में आ जाता है तब वह अपने को रोकता नहीं है, अपने को ठिठकाता नहीं है, अपने को मना नहीं करता है।

लेखक को स्वाधीनता और स्वायत्तता उसे उपहार या दान या राज्याश्रय में नहीं मिलती हैं, उसे जोखिम उठाकर, खतरों का मुकाबला करते हुए नैतिक साहस और आत्मिक बल से अर्जित करनी पड़ती हैं। नैतिक रूप से नि... होना आतिशबाज़ी का खेल नहीं है। लेखक की नैतिकता, उसका प्रतिरोध और उसकी प्रतिपक्षता पिंजरे में शेर की दहाड़ नहीं है। वह सूर्य की ओर उड़ने वाले परिन्दे की उड़ान है, वह मुक्तिबोध की कविता है। वह अपने आपसे स्वाधीन होने का कर्म है, वह मार्क्स और एंजिल्स का कम्युनिस्ट घोषणा–पत्र है। वह सच्चे रूप में व्यक्ति के मानवीय होने की निर्णायक घड़ी है।

हीगल कहता है कि नैतिक मनुष्य वह नहीं है जो केवल सही काम करना चाहता है और करता है और न वह अपराध–बोध से मुक्त मनुष्य है, नैतिक मनुष्य वह होता है जो अपने द्वारा किए गये कर्म के प्रति चेतन रहता है।

यहीं एक लेखक दूसरे लेखक से यह सवाल पूछ सकता है कि क्या एक लेखक के रूप में हमारे पास ऐसे विकल्प हैं जो हमारे जीने और सोचने के ढंग और तरीकों को बदल सकें? यह हमारी सभ्यता का ही केन्द्रीय प्रश्न नहीं है, एक लेखक के अस्तित्व से भी ताल्लुक रखता है। साहित्य स्वयं एक ऐसा